देश एवं विदेश के विद्वानों के प्रो० द्विवेदी के बारे में विचार एवं संमतियाँ

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के) योगतन्त्र विभाग में कार्य कर रहे या इसको छोड़कर गये हुए सभी व्यक्तियों में ये (पं. व्रजवल्लभ द्विवेदी) ही एकमात्र व्यक्ति हैं, जिनमें कि मेरे अनुसंधान सम्बन्धी दृष्टिकोण को सही रूप में समझने और उसको उचित पद्धति से कार्यान्वित करने की पूर्ण क्षमता है । इतना ही नहीं, मेरी दृष्टि में योगतन्त्र और आगम विषय पर कार्य कर रहे नई पीढ़ी के विद्वानों में ये योग्यतम व्यक्ति हैं।

महामहोपाध्याय प० गोपीनाथ कविराज
वाराणसी, २७-९-१९७०

मैंने ग्रन्थ (नित्याषोडशिकार्णव) आद्योपान्त पढ़ लिया है और आपके परिश्रम से बड़ा प्रभावित हुआ । ऐसे सामग्री और ऐसी भूमिका किसी पुस्तक में कभी नहीं देखी थी ।

लेफ्टिनेन्ट गवर्नर डॉ० आदित्यनाथ झा
दिल्ली, १ अप्रैल १९७०

ग्रन्थ (विज्ञानभैरव) के उपोद्घात में व्रजवल्लभ द्विवेदी ने आधुनिकता से ओत-प्रोत एक महत्त्वपूर्ण बात यह कही है कि किसी समय तान्त्रिक धर्म ने भारतीय संस्कृति को बुलन्दी पर पहुँचाया था । ...लेखक का आग्रह है कि गांधीवादी अथवा समाजवादी दर्शन में किसी योगविधि को नहीं अपनाया गया है, इसीलिये आज वे दिग्भ्रान्त हैं, रुग्ण हैं। भारतीय जनता तन और मन से बीमार है। आवश्यकता है योगशास्त्र के उपचार की । योगवासिष्ठ और विज्ञानभैरव जैसे ग्रन्थ इस अभाव को पूरी ईमानदारी से पूरा कर सकते हैं ।

आकाशवाणी, रायपुर

.... The introduction (to *Nityasodasikarnava*) is highly interesting piece of original research work (by Professor Vrajavallabha Dwivedi) in a field hardly accessible to modern academic scholarship....

Mahamahopadhyaya Pt. Gopinatha Kaviraja
Varanasi, 7 September, 1968

....Recent instances of a correct procedure in dealing with the written sources of Hindu Tantrism of the Sakta denomination are Carlstedt's studies on the KT-regrettably written in Swedish-and in another way, Dwivedi's edition of, and Sanskrit introduction into, the NST *(Nityasodasikarnava Tantra)* very useful.

Hindu Tantrism, p.4
Leiden : E. J. Brill, 1979

....Prof. Dwivedi, a well-known scholar and adept in the field of Tantrasastra, has very successfully done well justice to this Tantra (*Saktisangama Tantra*) in his learned introduction....

A. N. Jani
Director, Oriental Institute, Baroda
21 February, 1978

....In editing such rare text *(Vijnanabhairava)* painstakingly Pt. Dwivedi deserves special mention. His wide range of knowledge in the fields of Yoga and Tantra has made such a comparative estimate of the Saiva-agama text possible. The editor has shown his openmindedness. Undoubtedly, the present edition of the *Vijnanabhairava* has been a search light for an inquisitive mind.

N.K. Bose Memorial Foundation Newsletter
2 June, 1979

....Many of the important works on Yoga-Tantra produced by Sri Dwivedi are testimony to his sound grasp of the system. The present work (*Vijnanabhairava*) only adds on more feather to his cap.

Rtam
Lucknow

....This excellent edition (of Nityasodasikarnava, ed. by Vrajavallabha Dwivedi) is preceded by masterful introduction in Sanskrit which offers a succinct survey of the whole Tantric tradition.

Hindu Tantric Literature in Sanskrit (P. 60),
by T. Goudriaan (Holland).

....It (Satvata-samhita) is a contribution to scholarship of which you (Vrajavallabha Dwivedi) may be justly proud, and for which you will be remembered.

H. Daniel Smith
Professor of Religion
Syracuse University, New York

What is at present required from scholars of Tantrism is, in my opinion, the close study of single schools, on the basis of the published texts (where they exist) and, above all, the difficult work of editing what is preserved in manuscript form. Exemplary in this respect is the valuable work of Prof. Vrajavallabha Dwivedi, ex-Head of the Department of Yogatantra at the Sanskrit University of Varanasi, author of many editions of Tantric texts often accompanied by important introduction, capable as few others of moving with equal authority among the most diverse schools.

East and West, Roma
Vol. 33. 1983

....One should add that his numerous papers, and still more the excellent critical editions, he has made of such important texts as the Nityasodasikarnava, the Saktisangamatantra, part 4, the Satvatasamhita, and, most recently, the second volume of Luptagamasangraha (to mention only these four), together with the very learned and informative introductions in Sanskrit he wrote for these editions, are outstanding contributions to the domain of tantric studies.

Shree Vraj Vallabha Dwivedi is thus very well known, and very highly appreciated as a scholar in French indological circles (as well as, I happen to know, in corresponding circles in Great Britain, Germany and Holland.)

(Dr.) Andre Padoux
Director of Research in the
French Sentonal Centre for Scientific Research—-10.2.84

....Both Prof. Gnoli (formerly my teacher and now my colleague in the University of Rome) and I hold you in high esteem, as the best authority in the field of Tantric studies.

Dr. Raffable Torella
Universita, Degli Studi Di Roma La Sapienza,
Dipartimento Di Studi Orientali,
Facolta' Di Littere E Filosofia, 12-3-84

पं० व्रजवल्लभ द्विवेदी द्वारा लिखित निगमागम संस्कृति नामक पुस्तक 37 निबन्धों का एक संकलन है। सभी निबन्ध भारतीय संस्कृति एवं भारतीय दर्शन के परिचायक है। प्रो० द्विवेदी उच्च कोटि के विद्वान् हैं। इस पुस्तक की रचना इनका अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है।

बी० सत्यनारायण रेड्डी, (राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, 1992)

धर्म और संस्कृति के इस विघटनकारी देश-काल में इस पुस्तक (एक विश्व : एक संस्कृति) का विशेष महत्त्व है। भारत की पुरानी विचारधारा को आधार बनाकर लेखक ने सचमुच ही एक विश्व की स्थापना की है। ..... यह पुस्तक भारतवासियों में आत्मविश्वास एवं दुनिया के अन्य लोगों का मार्ग प्रशस्त करती है। आशा है इस पुस्तक का गहरा स्वागत होगा।

प्रो० युगेश्वर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

'एक विश्व : एक संस्कृति' के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अतिशय उत्प्रेरक महत्त्वपूर्ण, अमूल्य सोद्देश्य विचार है, जिसका गुम्फन भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि, विख्यात तन्त्रागमवेत्ता, चिन्तक विद्वान् प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी ने अत्यन्त अध्यवसायपूर्वक किया है। ..... 'एक विश्व : एक संस्कृति' वस्तुतः विशद आध्यात्मिक चिन्तन की पृष्ठभूमि पर विनिर्मित मानव मूल्यों और सांस्कृतिक संवेदनाओं की अद्वितीय विरासत है। आचार्य द्विवेदी जी ने भारतीय चिन्तन के आलोक में नाना धर्म-दर्शन-सभ्यता-संस्कृतियों का गहन विश्लेषण करके जो पदार्थ प्रस्तुत किया है, वह निःसन्देह मानवमात्र की कल्याणयात्रा का निर्दुष्ट पाथेय है।

डॉ० प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रवाचक, संस्कृत विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, 26 जून, 2003 ई०

प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी योगशास्त्र के योग्यतम विद्वान है, उनके द्वारा लिखित 'विज्ञान भैरव' ग्रन्थ का मैने अध्ययन किया, यह तन्त्रशास्त्र का अद्वितीय ग्रन्थ है, इसकी तुलना अन्य ग्रन्थों से नहीं कि जा सकती।

डा. मर्रि चेन्नारेड्डी,
राज्यपाल उ.प्र. ,1978

प्रो० द्विवेदी जी जैसी तन्त्र साधन तथा विद्वता विश्व के गिने चुने व्यक्तियों में ही देखने को मिलती है, इनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थ तन्त्रशास्त्र लिये अतुलनीय है, भारतीय संस्कृति पर द्विवेदी जी की विचारधारा को अपनाना राष्ट्रहित में होगा।

नारायण दत्त तिवारी
मुख्यमंत्री, उत्तरांचल
25 जुलाई, 2002

प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी संस्कृत साहित्य एवं योग दर्शन के प्रकांण्ड विद्वान है इसके द्वारा लिखित ग्रन्थ एवं उनकी भूमिकाएँ सभी इस विषय के शाधार्थी के लिये अनुकरणीय होगा। विश्व पटल पर प्रो. द्विवेदी जी चकते सितारे है।

प्रो. विष्णुकांत शास्त्री
राज्यपाल उ.प्र.
2003

प्रो० द्विवेदी जी का ग्रन्थ एक विश्व एक संस्कृति विश्व में व्याप्त नफरत एवं युद्ध के समाधान की ओर हमें ले जाता है, यह ग्रन्थ धर्मनिरपेक्ष की सही व्याख्या करता है।

भौरो सिंह शेखावत
उपराष्ट्रपति
भारतीय गणराज्य,
जुलाई, 2003

◆◆◆◆◆◆